प्रतिनिधि महिला नाटककारों के नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा की पी–एच.डी. (हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित रूपरेखा एवं उद्देश्य

शोध निर्देशिका :–

डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
डी.ई.आई. , दयालबाग़, आगरा।

शोधार्थिनी :–

आस्था तोमर
एम.ए., एम.फिल.(हिन्दी)

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. उर्मिला आनंद

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा – 282005

प्रतिनिधि महिला नाटककारों के नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

दृश्य काव्य में नाटक को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कहा भी गया है '**काव्येषु नाटकं रम्यम्'।** समस्त कलाओं की अपेक्षा नाटक सामूहिकता की कला है इसलिए वह मानव जीवन के सबसे अधिक निकट है। नाटक में जीवन का इतना व्यापक अनुकरण होता है कि उसमें कुछ छूट नहीं पाता। नाटक में समस्त कलाओं का आनंद एक साथ प्राप्त होता है। इस दृष्टि से नाट्य–कला अनेक कलाओं के योग से विकसित होने वाली कला है।

नाटक के पाठ्य–रूप की अपेक्षा दृश्य रूप का अधिक महत्त्व रहा है। दृश्य काव्य शब्द में ही नाटक और रंगमंच का संबंध छिपा हुआ है। किसी भी नाटक को सफल बनाने हेतु रंगमंच की आवश्यकता होती है। रंगमंच नाटक को पाठकों तक सम्प्रेषित करने का एक माध्यम है। किसी भी नाटक को रंगमंच पर ही जीवंतता प्राप्त होती है। रंगमंच को अलग करके किसी भी नाटक का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। अतः नाटक और रंगमंच का घनिष्ठ संबंध है। दोनों का संबंध अन्योन्याश्रित है। नाटक के बिना रंगमंच और रंगमंच के बिना नाटक की कल्पना नहीं की जा सकती। नाटक को प्रयोगविज्ञान भी कहा जाता है क्योंकि नाटक की सार्थकता रंगमंच पर अभिनीत होने में ही है। जो नाटक रंगमंच से कटा हुआ होगा, वह संवादात्मक कथा मात्र होगा। नाटक यदि आत्मा है तो रंगमंच उसका शरीर है। जिस प्रकार शरीर के बिना आत्मा को कोई रूप व आकार नहीं मिलता उसी प्रकार रंगमंच के अभाव में नाटक की कल्पना करना व्यर्थ ही है। 'रंगमंच' शब्द का प्रयोग वर्तमान समय में अत्यन्त व्यापक रूप में किया जाता है। यह केवल अभिनय मंच का ही वाचक नहीं है बल्कि इसमें नाटक और अभिनय से सम्बन्धित सभी तत्त्वों का समावेश है।

हिन्दी में नाट्य–लेखन की एक सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है। इस परम्परा के अन्तर्गत भारतेन्दु युग से लेकर अब तक अनेक महिला नाटककारों ने नाट्य–रचना की है। हिन्दी नाटक एवं रंगमंच के क्षेत्र में मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग,कुसुम कुमार, मृणाल पाण्डे, त्रिपुरारी

शर्मा, मीरा कांत, विभा रानी, नदीरा ज़हीर बब्बर आदि नाटककारों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनका नाट्य–साहित्य न केवल संख्यात्मक दृष्टि से अपितु गुणात्मक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। इन नाटककारों द्वारा रचित नाटकों का कथ्य स्त्री–प्रश्न एवं स्त्री –समस्या तक ही सीमित नहीं है अपितु इनके नाटक व्यापक विषय–भूमि को लेकर रचे गये हैं अतः इन नाटकों की हिन्दी–नाट्य–साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

महिला नाटककारों की नाट्य–संवेदना पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि इनमें एक गहन सर्जनात्मक दृष्टि की समानता है। इनके नाटकों की कथावस्तु अलग–अलग स्थितियों–परिस्थितियों में विकसित हुई है लेकिन उनमें भारतीय परम्परा का विस्तार है, जो उनके नाटकों को एक–दूसरे से जोड़ता है। इनके नाटकों में परम्परा के भीतर से फूटती हुई आधुनिकता दिखायी पड़ती है। इस दृष्टि से महिला नाटककारों की सर्जनात्मक दृष्टि और रंग–दृष्टि के तुलनात्मक आधार पर शोध अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। हिन्दी का नया रंगमंच महिला नाटककारों की रचनात्मक ऊर्जा से दिन–प्रतिदिन सम्पन्न हो रहा है। अतः महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन हिन्दी नाटक एवं रंगमंच की परम्परा को समझने का महत्त्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हो सकता है।

महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटकों की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनके नाटकों में विषय–वस्तु की व्यापकता एवं विभिन्नता है। इनके नाटकों की मूल संवेदना व्यापक एवं विभिन्न विषयों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना है। इन्होंने मात्र स्त्री से सम्बन्धित समस्याओं को लेकर नाटक नहीं लिखे अपितु इनका दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक रहा है। इनके नाटकों में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक चेतना भिन्न–भिन्न रूपों में दिखाई देती है। इनके नाटकों में समसामयिक समस्याओं, विसंगतियों आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है।

महिला नाटककारों के नाटकों की पात्र–योजना को तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि इनकी पात्र–योजना में विविधता है। इन्होंने अपने नाटकों में जीवन के विविध पक्षों को चित्रित करने के लिए विविध पात्रों की सृष्टि की है। इनके नाटकों के पात्र इनके उद्देश्य

के अनिवार्य अंग के रूप में सामने आते हैं। इनके लगभग सभी नाटक चरित्र प्रधान हैं। इनके नाटकों के पात्र सजीव हैं तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व से सम्पन्न हैं अतः इन पात्रों के प्रति पाठकों के मन में अद्भुत आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। पात्र एवं चरित्र–सृष्टि की दृष्टि से महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटक सफल सिद्ध होते हैं।

सन् 1950 के पश्चात् हिन्दी–नाटक में नवीन प्रयोगों का समावेश हुआ एवं नाट्य–अभिव्यंजना की दृष्टि से भी अनेक प्रयोग सामने आये। आठवें दशक के नाटकों में तो परम्परागत शिल्प को पूर्ण रूप से नकार दिया गया और अभिव्यंजना के नवीन एवं मौलिक प्रयोग सामने आये। महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटकों में भी ये नवीन प्रयोग दिखाई पड़ते हैं। इनके नाटकों में कथ्य, शिल्प, शैली, भाषा, संवाद आदि के महत्त्वपूर्ण प्रयोग दृष्टिगोचर होते हैं।

महिला नाटककारों की भाषा का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने के आधार पर कहा जा सकता है कि इनकी भाषा अर्थ के विभिन्न आयामों को उद्घाटित करती है, बिम्बों का विधान करती है और प्रतीकों के माध्यम से जीवन की तीखी अनुभूतियों को साकार करती है। इन नाटककारों ने एक ऐसी नाट्य–भाषा की खोज की है, जो आज की ज़िन्दगी के नाट्य–कथ्य को उसकी समग्रता में अभिव्यक्त कर सके, साथ ही यह नाट्य–भाषा आधुनिक रंगमंच की अपेक्षाओं के सर्वथा अनुकूल है। महिला नाटककारों की नाट्य–भाषा के अनेक स्तर हैं। इनकी भाषा जीवन के अनुभवों को गहराई से पकड़ती है। इस कारण इनकी भाषा में कृत्रिमता और बोझिलता नहीं है। इस भाषा ने हिन्दी–नाटक को एक नई पहचान दी है। नाट्य–संरचना में संवादों की स्थिति भी विशिष्ट होती है क्योंकि नाटक का सौन्दर्य–बोध संवादों के माध्यम से ही दर्शकों तक पहुँचता है। इस दृष्टि से महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटकों के संवाद सफल हैं। इनके नाटकों का एक–एक संवाद नये अर्थों की सृष्टि करता है। इनके नाटकों के संवाद सीधे और सपाट नहीं हैं। इनके संवादों का मुख्य आधार व्यंजना है इसलिए बिम्ब, प्रतीक आदि के साथ उनके संवादों का सौन्दर्य और अधिक बढ़ गया है। इनके संवादों से अधिक प्रभावशाली इनके बिम्ब और प्रतीक हैं। इनके नाटकों में बिम्ब और प्रतीक संवादों से जुड़कर नाट्य–संवेदना का और अधिक विस्तार करते हैं।

पाँचवें–छठे दशक में हिन्दी–रंगमंच के क्षेत्र में तकनीकी क्रान्ति ने अखिल भारतीय स्तर पर रंगमंच को व्यापक संदर्भ प्रदान किया। भारतीय कलाओं के इतिहास में पहली बार रंगमंच पर विभिन्न भाषाओं एवं प्रदेशों के अभिनेताओं, निर्देशकों एवं रंगकर्मियों की प्रतिभाएँ एकजुट हुईं और उनकी टकराहट से नवीन रचनात्मक तनाव उत्पन्न हुए एवं विविध रचनात्मक प्रयोग सामने आये। इन रचनात्मक प्रयोगों का तुलनात्मक दृष्टि से शोध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

हिन्दी–नाटक और रंगमंच के विकास में महिला नाटककारों का उल्लेखनीय योगदान है। इनके द्वारा रचित नाटक हिन्दी–रंगमंच को समृद्ध और सम्पन्न बनाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। सभी महिला नाटककारों के नाटक रंगमंच की दृष्टि सफल हैं। इनके द्वारा रचित नाटकों का अलग–अलग निर्देशकों के निर्देशन में मंचन हो चुका है और वे नाटक मंच पर अत्यधिक प्रसिद्ध भी हुए हैं। अनेक महिला नाटककार ऐसी भी हैं, जिन्होंने स्वयं नाट्य–संस्थाओं की स्थापना करके हिन्दी–रंगमंच के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इन्होंने अपनी नाट्य–संस्थाओं के द्वारा अपने ही नाटकों का निर्देशन करके उनको मंचित किया तथा भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के प्रसिद्ध नाटकों को मंच पर प्रस्तुत करके हिन्दी–रंगमंच को समृद्ध बनाया। इन नाटककारों ने न केवल मौलिक नाटक लिखकर हिन्दी–नाटक और रंगमंच के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया वरन् एकांकी ,लघु नाटक, काव्य नाटक, रेडियो नाटक, बाल नाटक आदि लिखकर हिन्दी नाट्य–साहित्य को सम्पन्न बनाया है। कुछ महिला नाटककारों ने निर्देशन, अनुवाद, अभिनय, नाट्य रूपांतर आदि सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। समकालीन महिला नाटककार नाटक एवं रंगमंच से संबंधित किसी न किसी क्षेत्र से जुड़ी रही हैं। अतः कहा जा सकता है कि महिला नाटककारों का हिन्दी–नाटक और रंगमंच को समृद्ध करने की दिशा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके लगभग सभी नाटक अभिनेयता की अपार संभावनाओं से युक्त हैं। लगभग सभी महिला नाटककारों के नाटक मंच पर सफलतापूर्वक प्रस्तुत हुए हैं, जिससे हिन्दी रंगमंच समृद्ध हुआ है। इनके नाटक दृश्य–योजना, प्रकाश–योजना, रूप–सज्जा, अभिनय, ध्वनि, गीत–संगीत आदि की दृष्टि से पूर्णतः सफल हैं। इनके नाटकों का दृश्य–विधान,

प्रकाश, अलंकरण, अभिनय, ध्वनि आदि की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

इस विषय से सम्बन्धित कुछ ग्रन्थ प्रकाश में आ चुके हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :–

1	हिन्दी–नाट्य शिल्पः बदलती रंगदृष्टि	डॉ. देवेन्द्र कुमार गुप्ता
2	हिन्दी नाटकः रंगानुशासन एवं प्रायोगिक नवोन्मेष	डॉ. वीणा गौतम
3	रंगभाषा	डॉ. गिरीश रस्तोगी
4	हिन्दी नाटकः नई परख	डॉ. रमेश गौतम
5	बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. गिरीश रस्तोगी
6	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महिला नाटककारों के नाटकों में सामाजिक चेतना	विनोद जैन
7	हिन्दी नाटकः कल और आज	केदार सिंह
8	आज का हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. परम लाल गुप्त
9	हिन्दी नाटक और रंगमंच	डॉ. रमेश गौतम
10	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच	जयदेव तनेजा

इन ग्रन्थों में महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटकों का परिचयात्मक एवं नाटकीय तत्त्वों की दृष्टि से तो अध्ययन उपलब्ध होता है लेकिन सम्पूर्ण रूप से रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन कहीं भी उपलब्ध नहीं होता है इसलिए शोधकर्त्री इस दिशा में शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुई। अब तक महिला नाटककारों द्वारा रचित नाटकों की साहित्यिक एवं शास्त्रीय समीक्षा तो होती रही है लेकिन उनके नाटकों के व्यावहारिक पक्ष (रंगमंच) का अध्ययन उपलब्ध नहीं होता। इस दृष्टि से प्रस्तावित शोध का विषय **'प्रतिनिधि महिला नाटककारों के नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन'** सर्वथा मौलिक एवं नवीन है।

तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत एक ही साहित्य के या विभिन्न साहित्यों के लेखकों की समानताओं एवं भिन्नताओं पर प्रकाश डालकर लेखकों के मूल प्रेरणा–स्रोतों, जीवन–दृष्टियों, जीवन–मूल्यों एवं सिद्धान्तों की तुलना की जाती है। हिन्दी के तुलनात्मक अध्ययन एवं शोध

को व्यापक स्तर पर ग्रहण करना वर्तमान समय की आवश्यकता ही नहीं, अनिवार्यता भी है। स्वयं को अधिकाधिक सम्पन्न करने हेतु तथा विश्व–पटल पर प्रतिष्ठित होने के लिए (हिन्दी के साहित्यकारों के सन्दर्भ में) भी तुलनात्मक शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित शोध का महत्त्व स्वतः सिद्ध है।

शोधार्थिनी :–

आस्था तोमर
एम.ए., एम.फिल.(हिन्दी)

प्रतिनिधि महिला नाटककारों के नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय – विषय–चयन

(क) विषय की व्याख्या

(ख) विषय का महत्त्व

(ग) विषय से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्य

(घ) विषय की मौलिकता

द्वितीय अध्याय – हिन्दी में नाट्य–लेखन–परम्परा और प्रतिनिधि महिला नाटककारों का परिचय

तृतीय अध्याय – रंगमंच : अवधारणा एवं स्वरूप

(क) रंगमंच – स्वरूप,परम्परा और विकास

(ख) नाटक और रंगमंच का संबंध

(ग) रंगमंच के विविध सर्जनात्मक आयाम

चतुर्थ अध्याय – प्रतिनिधि महिला नाटककारों की नाट्य –संवेदना

(क) कथावस्तु

(ख) पात्र –सृष्टि

तुलनात्मक निष्कर्ष

पंचम अध्याय – प्रतिनिधि महिला नाटककारों की नाट्य–अभिव्यंजना

(क) संवाद –योजना

(ख) भाषा–शैली

(ग) बिम्ब –योजना

(घ) प्रतीक –योजना

तुलनात्मक निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय – प्रतिनिधि महिला नाटककारों के नाटकों का रंगमंच की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

(1) दृश्य–योजना

(2) रूप –सज्जा

(3) प्रकाश–योजना

(4) अभिनय

(5) ध्वनि एवं गीत –संगीत

उपसंहार

परिशिष्ट – 1. **<u>साक्षात्कार</u>**

2. संदर्भ–ग्रंथ सूची–

1. आधार ग्रंथ
2. समीक्षात्मक हिंदी ग्रंथ
3. समीक्षात्मक अंग्रेजी ग्रंथ
4. शब्दकोश
5. पत्र–पत्रिकाएँ
6. प्रमुख नाट्य–संस्थाएँ एवं प्रमुख निर्देशक

परिशिष्ट

आधार – ग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थ का नाम	लेखक	प्रकाशन	संस्करण
1.	बिना दीवारों का घर	मन्नू भण्डारी	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1966
2.	एक और अजनबी	मृदुला गर्ग	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली –110002	1978
3.	जादू का कालीन	मृदुला गर्ग	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1993
4.	ओम क्रान्ति क्रान्ति	कुसुम कुमार	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली –110002	1979
5.	सुनो शेफाली	कुसुम कुमार	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1979
6.	संस्कार को नमस्कार	कुसुम कुमार	सरस्वती विहार, दिल्ली	1982
7.	दिल्ली ऊँचा सुनती है	कुसुम कुमार	सरस्वती विहार, दिल्ली	1982
8.	रावण लीला	कुसुम कुमार	सरस्वती विहार, दिल्ली	1983
9.	पवन चतुर्वेदी की डायरी	कुसुम कुमार	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली –110002	1986
10.	मौजूदा हालात को देखते हुए	मृणाल पाण्डे	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली –110002	1981
11.	जो राम रचि राखा	मृणाल पाण्डे	नटरंग अंक–36	1983
12.	आदमी जो मछुवारा नहीं था	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली –110002	1985

13.	चोर निकल के भागा	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली –110002	1999
14.	अक्स / पहेली	त्रिपुरारी शर्मा	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1984
15.	बहू	त्रिपुरारी शर्मा	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1984
16.	काठ की गाड़ी	त्रिपुरारी शर्मा	विद्यामन्दिर प्रकाशन, दिल्ली	1986
17.	रेशमी रूमाल	त्रिपुरारी शर्मा	शुभकामना प्रकाशन, दिल्ली	1989
18.	सन सत्तावन का किस्साः अज़ीनुननिसा	त्रिपुरारी शर्मा	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1999
19.	नेपथ्य राग	मीरा कांत	भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली –110002	प्रथम संस्करण 2006
20	हुमा को उड़ जाने दो	मीरा कांत	वाणी प्रकाशन 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली– 110002	प्रथम संस्करण 2008
21.	कन्धे पर बैठा था शाप (कन्धे पर बैठा था शाप, काली बर्फ़, मेघ–प्रश्न)	मीरा कांत	भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली –110002	द्वितीय संस्करण 2010
22	ईहामृग	मीरा कांत	मेधा बुक्स एक्स–11 नवीन शाहदरा,दिल्ली	प्रथम संस्करण 2011
23.	भुवनेश्वर दर भुवनेश्वर	मीरा कांत	मेधा बुक्स एक्स–11 नवीन शाहदरा, दिल्ली	प्रथम संस्करण 2011
24.	अन्त हाज़िर हो	मीरा कांत	भारतीय ज्ञानपीठ इन्स्टीट्यूशनल 18 एरिया लोदी रोड, नयी दिल्ली –110002	प्रथम संस्करण 2012
25.	कन्धे पर क्यों बैठा शाप	मीरा कांत	नयी किताब 1/11829 प्रथम मंजिल,पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली	प्रथम संस्करण 2013
26.	तीन अकेले साथ– साथ (गली दुल्हनवाली, धामपुर, काग़ज़ी बुर्ज़)	मीरा कांत	स्वराज प्रकाशन 4648/ 21 अंसारी रोड दरियागंज नयी दिल्ली – 110002	प्रथम संस्करण 2013
27.	आओ तनिक प्रेम करें	विभा रानी	किताब घर प्रकाशन, दिल्ली	2006

28.	अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो	विभा रानी	किताब घर प्रकाशन, दिल्ली	2008
29.	जी, जैसी आपकी मर्जी...	नदीरा ज़हीर बब्बर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2008
30.	सकुबाई	नदीरा ज़हीर बब्बर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2008
31.	सुमन और सना	नदीरा ज़हीर बब्बर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2008
32.	आपरेशन क्लाउडबर्स्ट	नदीरा ज़हीर बब्बर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2008
33.	दयाशंकर की डायरी	नदीरा ज़हीर बब्बर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2008

सहायक ग्रन्थ

क्र सं.	ग्रन्थ का नाम	लेखक	प्रकाशन	संस्करण
1.	आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल	लिपि प्रकाशन,दिल्ली –110002	प्रथम संस्करण 1989
2.	आधुनिक हिन्दी नाटक (चरित्र सृष्टि के आयाम)	डॉ. लक्ष्मी राय	तक्षशिला प्रकाशन,दिल्ली –110002	संस्करण 1989
3.	आधुनिक हिन्दी नाटकः संवेदना और रंग–शिल्प के नए आयाम	डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया	भावना प्रकाशन, दिल्ली –110002	संस्करण 1998
4.	रंगमंच और स्वाधीनता–आन्दोलन	विजय पंडित	वाणी प्रकाशन दिल्ली –110002,	प्रथम संस्करण1998

5.	समकालीन हिन्दी नाटककार	गिरीश रस्तोगी	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन कृष्णनगर, दिल्ली	प्रथम संस्करण 1998
6.	साठोत्तर हिन्दी नाटक	डॉ. नीलम राठी	संजय प्रकाशन,नयी दिल्ली–110002	प्रथम संस्करण 2001
7.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य में युग– बोध	डॉ. मंजरी त्रिपाठी	लोकवाणी संस्थान, दिल्ली	प्रथम संस्करण 2008
8.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महिला नाटककारों के नाटकों में सामाजिक चेतना	श्रीमती विनोद जैन	के. के. पब्लिकेशन नयी दिल्ली	प्रथम संस्करण 2007
9.	हिन्दी नाटकः कल और आज	केदार सिंह	क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी,नयी दिल्ली–110002	प्रथम संस्करण 2005
10.	हिन्दी नाटकः वर्तमान संदर्भ	डॉ. परमेश्वरी	संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली	प्रथम संस्करण 2009
11.	हिन्दी–नाट्यशिल्पः बदलती रंगदृष्टि	डॉ.देवेन्द्र कुमार गुप्ता	पीयूष प्रकाशन, नयी दिल्ली	प्रथम संस्करण 2005
12.	हिन्दी रंगमंच का उद्भव और विकास	डॉ. विश्वनाथ शर्मा	उषा पब्लिशिंग हाउस, जोधपुर	प्रथम संस्करण 1979

<u>पत्र–पत्रिकाएँ</u>

क्र.सं.	पत्रिका का नाम	संपादक	प्रकाशन
1.	इंडिया टुडे	प्रभु चावला	नयी दिल्ली
2.	नटरंग	अशोक वाजपेयी,रश्मि वाजपेयी	दिल्ली
3.	नया ज्ञानोदय	डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय	नयी दिल्ली
4.	परिकथा	शंकर	दिल्ली
5.	रंग – प्रसंग	प्रयाग शुक्ल	दिल्ली